सन्त निश्चल दास – एक महान वेदान्तिक दार्शनिक

डॉ॰ एल. एन. दहिया* और डॉ॰ कुसुम**

भारतवर्ष की तरह हरियाणा भी युगों से सन्तों और ऋषियों की भूमि रहा है। यहाँ समस्त मानवता को विश्व बन्धुत्व तथा प्रेम का दिव्य संदेश देने वाले मनीषियों ने जन्म लिया है। गौरवशाली अतीत में, सरस्वती नदी के तट पर जो एक समय हरियाणा क्षेत्र से प्रवाहित थी, महान ऋषियों द्वारा वेद और उपनिषदों का उच्चारण किया गया। हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक नगर कुरूक्षेत्र भारत की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के पालक और पोषक के रूप मे जाना जाता है। यहीं पर लगभग 5,000 वर्ष पहले महाभारत युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता के महान दर्शन की व्याख्या की थी। हरियाणा की इसी धरा पर वेद व्यास ने अमर महाकाव्य महाभारत की रचना की थी। वैष्णव परम्परा के महान सन्त कवि, भगवान कृष्ण के भक्त और सूर सागर के रचयिता, सूरदास हरियाणा के फरीदाबाद जिला के सीही गाँव में जन्मे थे। उल्लेखनीय है कि हरियाणा में विभिन्न युगों में अलग–अलग धर्मों और सम्प्रदायों के अनुयायी रहे हैं, जिन प्रत्येक में प्रसिद्ध सन्त और साधु पैदा हुए हैं। निश्चल दास और गरीब दास दो प्रसिद्ध जाट सन्त हैं जो 18वीं शताब्दी में हरियाणा में पैदा हुए। यह शोधपत्र सन्त निश्चल दास की जीवनी, उनके ग्रन्थों और वेदान्त दर्शन पर चर्चा और विश्लेषण हेतु समर्पित है। उनकी महानता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उनका सर्वोच्च ग्रन्थ 'विचार सागर' पहली जनवरी, 1877 को दिल्ली दरबार में ब्रिटिश शासकों को सव्याख्या प्रस्तुत हुआ था। उससे पहले भारत के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफ़र, जो स्वयं एक दार्शनिक थे, ने दार्शनिक शायर मिर्ज़ा ग़ालिब को किढ़ौली गाँव (सोनीपत) में, धर्म दर्शन पर गोष्ठी हेतु निश्चल दास को बुलाने भेजा था। कुछ समय पहले श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 04.10.2017 से 10.10.2017 'राष्ट्रीय विचार सागर स्वाध्याय कार्यशाला' का आयोजन किया गया। प्रतिभागी मनीषिगण के निष्कर्ष अनुसार सन्त निश्चल दास आदि शंकर के ज्ञानावतार सिद्ध हैं। विश्वव्यापी अनुसंधान जनित मान्यतानुसार आदि शंकर स्वयं भगवान शिवशंकर के अवतार थे।

* *डा॰ एल॰एन॰ दहिया महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक के भूतपूर्व कुलपति तथा भारतीय वाणिज्य संघ के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। 1129, सैक्टर–3, रोहतक–124001 (हरियाणा)* lndahiya1129@gmail.com

** *डा॰ कुसुम वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय बहादुरगढ़ (हरियाणा) के इतिहास विभाग में ऐसोसिएट प्रोफ़ेसर है।*

प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा

निश्चल दास का जन्म 1791 ई० (वि०स० 1848) में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन गाँव कूंगड़, जिला भिवानी (हरियाणा) में हुआ था। कुछेक विद्वानों के मत में वे किढ़ौली गाँव, जिला सोनीपत में दहिया गोत्र में उत्पन्न हुए, जो बाद में जीवन के अंतिम सांस तक लगभग 36 वर्ष तक उनकी तपोभूमि और कर्मभूमि रही। पेशे से किसान निश्चल दास के पिता मुक्ता राम अत्यन्त निर्धन थे तथा शीघ्र ही उनकी धर्मपत्नी का देहान्त भी हो गया था। अगड़ी (निश्चल दास का बचपन का नाम) को गाँव में ही अक्षर ज्ञान के लिए स्थानीय स्कूल के शिक्षक के पास भेजा गया जो प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार माधव प्रसाद मिश्र के दादा थे। दक्षिणी हरियाणा के इस शुष्क क्षेत्र में बार–बार अकाल पड़ने से दयनीय गरीबी से विवश होकर मुक्ताराम ने पुत्र अगड़ी को साथ लेकर जीविका की तलाश में गाँव छोड़ दिया और 1799 ई० में खारी बावली दिल्ली स्थित दादू आश्रम में शरण ली। आश्रम के प्रमुख महन्त अलखराम ने बालक अगड़ी की असाधारण प्रतिभा तथा आध्यात्मिक झुकाव को पहचान, उसको दादू सम्प्रदाय में मिला कर, उसका नाम निश्चल दास रख दिया। निश्चल दास ने इस आश्रम में लगभग सात वर्ष तक रहकर दादू वाणी तथा वेदान्त के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया। इसी दौरान निश्चल दास की बढ़ती ज्ञान पिपासा को बुझाने हेतु उच्चतर ज्ञान दिलाने के लिए गुरू अलखराम ने उनको जालन्धर, अमृतसर और लाहौर के आश्रमों में भेजा। अन्ततः निश्चल दास को 1806 ई० मे काशी भेजा जो उन दिनों भारतीय दर्शन तथा वेदान्त ज्ञान का बहुत बड़ा केन्द्र था। वहाँ उसने संस्कृत भाषा, व्याकरण, आध्यात्मिकता सीखी और सांख्य, न्याय, अद्वैत वेदान्त, छंद शास्त्र और आयुर्वेद का गहन ज्ञान, उदासीन आश्रम के गुरू दामोदर शास्त्री और काकाराम से ग्रहण किया। नव्य न्याय के सूक्ष्म ज्ञानार्जन के लिए वे नादिया (बंगाल) भी गए। नादिया पश्चिमी बंगाल का अब एक प्रशासकीय व सांस्कृतिक जिला है तथा यह श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म स्थान भी है। शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त उनके गुरू ने निश्चल दास के साथ अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखा तो निश्चल दास ने विवाह के प्रति अपनी अनिच्छा प्रकट कर अन्ततः गुरू को बता दिया कि वह जाति से ब्राह्मण न होकर जाट है। ऐसा सुनकर गुरू क्रोध से आग बबूला हुए और निश्चल दास को तीन श्राप दिए जो इस प्रकार हैं : (1) सर्वदा के लिए असाध्य ज्वर व्याधि से पीड़ित होंगे, (2) तुम्हारी ब्रह्म विद्या शिष्य परम्परा में फलवती नहीं होगी, और (3) आजीवन अविवाहित रहोगे या दो विवाह होंगे। पता चला है कि तीनों श्राप फलीभूत होकर सत्य निकले। यहाँ यह बताना आवश्यक होगा

कि उन दिनों में गैर–ब्राह्मणों का काशी के संस्कृत विद्यालयों में प्रवेश वर्जित था। इसलिए संस्कृत तथा वेदान्त दर्शन ज्ञान हेतु प्रवेश पाने के लिए निश्चल दास ने स्वयं को सारस्वत ब्राह्मण पुत्र बताया था।

1826 ई० के आसपास 35 वर्ष की आयु में निश्चल दास काशी से चल कर दिल्ली में अपने पुराने आश्रम में लौट आए। उनके गुरू ने पुराने गुरूओं को धन्यवाद देने तथा उस क्षेत्र में वेदान्त के प्रचार हेतु निश्चल दास को एक बार फिर पंजाब भेजा। पंजाब से पैदल लौटते समय वे एक अन्य साधु के साथ थे। गाँव किढ़ौली (खरखौदा–सोनीपत) में दोनों साधुओं को रात्रि पड़ाव के लिए एक वैरागिन का अनुरोध स्वीकार करना पड़ा। प्रातःकाल चलते समय गाँव वालों ने देखा तो विवाद उत्पन्न हो गया। साधुओं ने ग्रामीणों को रात्रि पड़ाव की मजबूरी बताई तथा स्वयं को ब्रह्म विद्या उपासक। शंकित गाँव वालों ने उनको सिद्धि चमत्कार के द्वारा वर्षा लाकर अकाल स्थिति समाप्त करने की चुनौती दी। इतना कहते ही घनघौर बादल छाए तथा घंटों धुंआधार वर्षा हुई। लज्जित ग्रामीण उनके चरणों में लेट गए तथा उनको देवदूत मान कर स्थायी रूप से वहीं रहने की याचना की। उनके न मानने पर गाँव वाले उनको दिल्ली तक विदा करने आए। विभिन्न कारणों से निश्चल दास दिल्ली के दादू आश्रम में चैन और सहजता का अनुभव नहीं कर रहे थे। यद्यपि दादू पंथ जाति प्रथा को नहीं मानता, फिर भी दादू आश्रम में ब्राह्मणों का आधिपत्य होना तथा निश्चल दास का गैर–ब्राह्मण होना मानसिक दुराव का कारण था। इसके अतिरिक्त निश्चल दास एकाग्रता, पठन, लेखन तथा योग साधना के लिए शान्त तथा एकान्त स्थान के इच्छुक थे। इन्हीं दो प्रारम्भिक कारणों से निश्चल दास, दिल्ली से 45 किलोमीटर दूर स्थित उसी किढ़ौली गाँव लौटे जहाँ वे एक बार रात्रि में रूके थे, और जहाँ उनका गाँव वालों के साथ भावनात्मक लगाव हो गया था। गाँव वालों ने उनके पुनरागमन को यह कह कर स्वागत किया

निश्चल आया निश्चल आया।
ज्ञान गूदड़ी बांध क ल्याया।।

शीघ्र ही आसपास के क्षेत्र में यह निश्चल दास आश्रम लोकप्रिय तीर्थ स्थान बन गया और भारी संख्या में अनुयायी तथा अन्य लोग ज्ञान, आध्यात्मिक उत्थान और असाध्य रोगों के इलाज हेतु प्रतिदिन आने लगे। गरीबों के लिए आश्रम मुफ्त इलाज तथा लंगर का प्रबन्ध करता था। इस क्षेत्र में निश्चल दास की व्यापक मान्यता हो गई। किढ़ौली आश्रम में वे अन्तिम सांस (1863) तक 36 वर्ष रहे। यहीं पर निर्विकल्प समाधि द्वारा जीवित मोक्ष प्राप्त किया और तत्पश्चात 10 ग्रन्थ लिखे। वे तत्त्ववेता ही

नहीं थे अपितु तत्त्वदृष्टा भी थे। 14.07.1863 को अस्वस्थ स्थिति में उन्होंने दिल्ली में अपने पुराने दादू आश्रम में जाने की इच्छा व्यक्त की। उनको शिष्य पालकी में ले गए। उसी दिन सांय दिल्ली पहुंचने पर वे परम ब्रह्म में विलीन हुए। अगले दिन यमुना नदी तट स्थित निगम बोध घाट पर उनकी पूर्ण सम्मान के साथ अन्तयेष्टि की गयी। फिर भी उनकी समाधि किढ़ौली में बनाई गई, जो 36 वर्ष तक उनकी कर्मभूमि रही थी।

उनका दर्शन

अनन्त काल से ईश्वर, आत्मा और मायावी जगत की अवधारणाएं मानव मस्तिष्क को झकोरती रही हैं। इन विषयों का सामना करते समय भय, लगाव, संशय और आस्था मानव के दिमाग और आत्मा को प्रभावित करते रहे हैं। इन टेढ़े प्रश्नों से निश्चल दास भी अभिभूत थे और अन्ततः अद्वैत दर्शन का अपना पक्ष प्रस्तुत किया। निश्चल दास अद्वैत वेदान्त, जो भारतीय दर्शन की सबसे प्रभावशाली शाखा है, के अनुयायी दादू पंथी साधु थे। निश्चल दास आठवीं सदी के वैदिक विद्वान सन्त आदि शंकराचार्य (आदि शंकर) से प्रभावित थे जिन्होंने जीवात्मा और परम ब्रह्म की एकता स्थापित की थी। अद्वैत वेदान्त मोक्ष प्राप्ति हेतु एक हिन्दू साधना पद्धति है जिसमें जीवात्मा और परमात्मा में अभेद्यावस्था है।

यूनान के मनीषीगण, विशेषकर सुकरात तथा भारत में अरविंद घोष भी आत्मा की शरीर परिवर्तन यात्रा में विश्वास रखते थे। आदि शंकर तथा अन्य उल्लेखनीय सिद्ध योगियों की तरह निश्चल दास को भी परकाया सिद्धि प्राप्त थी, जैसा कि दादू आश्रम नरेना के साधू सन्तों ने बताया। निश्चल दास की दिव्य जीवन यात्रा किसी गन्तव्य बन्दरगाह की ओर अग्रसर न होकर, एक आध्यात्मिक यात्रा का सतत् उद्भव था जो आध्यात्म के सामान को मार्ग पर उतारती जाती थी। वाराणसी में उनके गुरूओं ने निश्चल दास में पूर्व जन्मों से एकत्रित प्रवृतियां और सम्पूर्णताए भांप ली थी। इस प्रकार के अन्य उदाहरण सभी धर्मों में विशेषकर हिन्दू धर्म में प्रचुर मात्रा में हैं। चाहे सीमित दायरे में ही हो पर निश्चल पंथ से शांति प्राप्ति की कल्पना, उमंग और विचार यूरोपीय जातियों में भी आया। यह हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि निश्चल पंथी भारत तक ही सीमित नहीं हैं, परन्तु सारे यूरोप और अन्य देशों में भी फैले हुए हैं। यह बात प्रकाश में आई कि कई निश्चल पंथी साहित्य और धार्मिक चिन्हों की तलाश में दादू पंथी संस्थाओं, आश्रमों और श्री दादू स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय जयपुर में आते रहे हैं। निश्चल दास के अनुसार जीव ब्रह्म से पृथक

नहीं है। 'अंह ब्रह्मस्मि' अथवा 'आत्मा सो परमात्मा' इसी का ज्ञान मुक्ति है। ब्रह्म तथा जीव में अन्तर मायावी जगत से उत्पन्न होता है। मोहवश जगत के प्रभाव में हम अपने रहने वाले जगत को वास्तविक सत्य समझ बैठते हैं (यद्यपि ऐसा नहीं है) और आत्मा–परमात्मा के सम्बन्ध को भूलकर आनन्द, आराम और शांति पाने की झूठी आशा में, धन दौलत एकत्रित करने लग जाते हैं। ऐसा संसार अविद्या के कारण प्रकट हो रहा है। यही अविद्या भ्रम को वास्तविकता पर मढ़ कर, असत्य को सत्य प्रतिबिम्बित करने की क्षमता रखती है। प्रपंच में फंसा जीव, आत्मा और परमात्मा में अन्तर अनुभव करता है। यह अविद्या जनित भ्रमजाल ज्ञान के उदय से नष्ट हो जाता है। निश्चल दास इस बात को सर्प और रस्सी के उपयुक्त उदाहरण से वर्णन करते हैं। उन्होंने बताया कि कोई व्यक्ति जब रात्रि के अन्धकार में घास फूस के ढेर में रस्सी को सर्प समझ बैठता है, तो अन्धेरा नष्ट होने व प्रकाश होने पर सर्प का भ्रम दूर हो रस्सी का ज्ञान हो जाता है। ठीक उसी प्रकार आत्म–ज्ञान प्रकाश द्वारा जगत की अनित्यता तथा अद्वैत ब्रह्म की वास्तविकता जान ली जाती है। निश्चल दास रचित विचार सागर ग्रन्थ के निम्न छंद में इस भ्रमजाल का सुन्दर वर्णन किया है।

हवै जिहि जाने बिन जगत, मनहु जेवरी सांप।
नशै भुजंग जग जिहि लहै, सो अंह आपे आप।।

निश्चल दास के अनुसार जीवात्मा ब्रह्म से पृथक नहीं है और दोनों में अनेकता और अन्तर का आभास, रस्सी में सर्प की तरह, अज्ञानता और निष्कर्ष की त्रुटि से होता है। उसी परम ब्रह्म का ज्ञान जो निराकार, अविभाज्य, अकाट्य, असीम और माया की परिधि से परे है, सारी त्रुटियों का निवारण करके ससांरी बंधनों और आवागमन के जंजाल से जीव को मुक्त करता है। सभी वस्तुओं और अनुभवों में परिलक्षित ब्रह्म ही मूलभूत वास्तविकता है। परम् ब्रह्म की इच्छानुसार संसार की रचना करने वाले अविद्या और माया से जीव वशीभूत होता है। निश्चल दास द्वारा मान्य तथा दर्शन का उल्लेखनीय पहलू यही है कि एक ही परम तत्त्व ब्रह्म समस्त जड़ चेतन जगत पर नियन्त्रण करता है। जीव इससे पृथक नहीं है। जीव ब्रह्म का ही स्वरूप है और दोनों में कोई भेद नहीं है। हिन्दू दर्शन की इस शाखा का लोक प्रचलित नाम अद्वैत वेदान्त है। इसके विपरीत द्वैतवाद की एक अन्य शाखा है जिसके अनुयायी आनन्दतीर्थ (1199–1278 ई०), माधवाचार्य (1238–1317 ई०), वल्लभाचार्य (1497–1531 ई०) और चैतन्य महाप्रभु (1486–1534 ई०) हुए हैं जो जीव ब्रह्म की पृथकता मानते थे।

उनकी साहित्यिक कृतियां

निश्चल दास सस्कृत और हिन्दी के प्रगाढ़ विद्वान और उच्चकोटि के लेखक थे। उन्होंने वेदान्त दर्शन और आध्यात्मिक जीवन के पहलुओं पर दस ग्रन्थ लिखे। अपने शीर्ष ग्रन्थों के कारण उनकी गिनती उच्चकोटि के विचारकों और दार्शनिकों में होती है। इन ग्रन्थों की रचना उन्होंने आत्मबोध प्राप्ति (1842 ई०) के पश्चात् की। उनकी संस्कृत कृतियां इशोप्निषद, कठोप्निषद, महाभारत, वृति विवरण, वृति दीपिका, तत्त्व सिद्धान्त और आयुर्वेद हैं। दुर्भाग्य से ये सारी हस्तलिपियाँ सुलभ नहीं हैं। हिन्दी साहित्य में उनका अनूठा योगदान, तीन प्रकाशित दार्शनिक पुस्तकों, विचार सागर, वृति प्रभाकर और युक्ति प्रकाश द्वारा हुआ है। आगे चलकर हम विचार सागर का विस्तृत विवरण करते हैं और शेष दो का संक्षिप्त में।

विचार सागर

उनके सभी ग्रन्थों में 'विचार सागर' सर्वाधिक लोकप्रिय है। वेदान्त समझने के लिए जनसाधारण को ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह ग्रन्थ हरियाणवी, राजस्थानी शब्दावली के मिश्रण सहित हिन्दी में प्रस्तुत किया। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह ग्रन्थ वेद और वेदान्त के पढ़े बिना भी वेदान्त की विभिन्न प्रक्रियाओं को समझाने में पूरा सहायक है। सागर की तरह विचार सागर समृद्ध ग्रन्थ है, सागर की तरह दिशाओं में विस्तृत, ऊपर–नीची दिशा में गहरा, जल की विभिन्न तरंगों से पूर्ण। इस शीर्ष ग्रन्थ की रचना 1848 ई० में हुई। सात अध्यायों वाले इस ग्रन्थ में 554 गूढ़ पद हैं। प्रत्येक अध्याय को तरंग कहते हैं। लगभग 1200 वर्ष पूर्व आदि शंकर की संस्कृत व्याख्या के बाद, यह वेदान्त पर हिन्दी में पहली व्याख्या है। इस ग्रन्थ में निश्चल दास ने जीव, ब्रह्म, माया और पारस्परिक सम्बन्धों की पड़ताल की है, जिसकी परिणति बन्धन रहित मोक्ष में होती है। अपने तर्क के मुख्य धागों को वे पहले बताए गए सांप और रस्सी के उदाहरण से गूंथते हैं। एक राजा तथा आध्यात्मिकता उन्मुख तीन पुत्रों की काल्पनिक कहानी का भी उदाहरण है। चूंकि सन्त निश्चल दास पंचदेव उपासक थे, उन्होंने पहले अध्याय में परम ब्रह्म और ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, गणेश आदि परम ब्रह्म के अधीनस्थ विभिन्न शक्तियों की स्तुति और वन्दना की है। एक जैविक ऋषि निश्चल दास ने जैविक वेदान्त, विचार सागर लिखा है। मंगलाचरण या स्तुति वन्दना के रूप में पहली तरंग का पहला दोहा, शुभ अवसर का आह्वान है।

जो सुख नित्य प्रकाश, विभु नाम रूप आधार।
मति न लखै जिहि मति लखै, सो मैं शुद्ध अपार।।

इसमें कहा गया है कि सृष्टि रचयिता परम ब्रह्म मेरे प्रसन्नचित मे विद्यमान हैं। वह काल रहित, असीम, शाश्वत, स्वप्रकाश से उदीप्यमान, सर्वव्यापक और विश्व के सब पदार्थों का आधार हैं। अपवित्र और दूषित मन उन्हें जान नहीं सकता, परन्तु शुद्ध मन को अपने रचयिता का ज्ञान होता है। परम ब्रह्म का वास मुझ में ही है, जिसके जानने से सभी देवताओं का ज्ञान हो जाता है। दूसरी तरंग में निश्चल दास ने जीवात्मा के मोक्ष का गहन मूल्यांकन करते हुए कहा है कि आवागमन के चक्र से छूट कर परम ज्योति में विलीन होना ही जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इस तरंग में उन्होंने जीव हेतु, मोक्ष प्राप्ति और संशय निवारण द्वारा अज्ञान मिटाने की रूपरेखा बनाई है। तृतीय अध्याय से वेदान्त प्रारम्भ होता है, जिसमें श्रेष्ठ गुरू और योग्य शिष्य की विशेषताओं का सुन्दर चित्रण है। निश्चल दास कहते हैं कि शिष्य को ईश्वर से भी अधिक, गुरू के प्रति अत्यधिक प्रेम और आदरभाव रखना चाहिए। गुरू के बिना शिष्य बुद्धिमान हो सकता है पर उसे गहरे आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। निम्नलिखित पद में इस तथ्य पर बल दिया गया है।

ईश्वर तै भी गुरू में अधिक, धारे भक्ति सुजान।
बिन गुरू भक्ति प्रवीण हूँ, लहै न आत्म ज्ञान।।

आगे चौथे, पांचवे और छठे तरंग (अध्याय) में बुद्धि के विभिन्न स्तर वाले आध्यात्मिक झुकाव वाले मनुष्यों के लिए मुक्ति के पृथक मार्ग बताए हैं। मुक्ति के अलग–अलग मार्ग सुझाने के लिए अपने तर्कों की डोरी को शुभसन्तति नामक एक काल्पनिक चक्रवर्ती राजा और उसके तीन पुत्रों (तत्त्वदृष्टि – उत्तम अधिकारी, अदृष्टि – मध्यम अधिकारी और तर्कदृष्टि – कनिष्ठ अधिकारी) की कहानी से जोड़ा है। कहानी के अनुसार एक दिन राजा ने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि सांसारिक सम्पत्ति, वैभव और राजा के पद से उनका मन भर गया है और एकान्तवास में आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहते हैं। अतः तीनों पुत्र आपस में बांट कर राज्य का उपभोग करें। ऐसा सुन कर तीनों पुत्रों ने राजा की भेंट अस्वीकार कर दी। सोचा कि इतने विशाल राज्य के उपभोग में पिताश्री को सान्त्वना नहीं मिली तो उनको कैसे मिलेगी। उसके बाद तीनों भाई आत्मप्रकाश और मोक्ष हेतु किसी सच्चे गुरू को ढूंढने वन में चले गए। अत्यधिक भ्रमण के बाद उन्होंने गंगा तट पर तपस्या में लीन एक साधु (गुरू) को देखा। उन्होंने गुरू मान कर उनसे मोक्ष मार्गदर्शन की याचना की। गुरू ने उनकी परस्पर भिन्न–भिन्न मानसिक संरचना का मूल्यांकन कर, उनको मुक्ति

दिलाने के लिए विभिन्न पद्धतियों को अपनाया। राजा के तीन पुत्रों का तीन श्रेणियों में वर्णन, विचार सागर के निम्नलिखित पद में है।

तत्त्व दृष्टि इक नाम अहि, दूजो कहत अदृष्ट।
तर्क दृष्टि पुनि तीसरो, उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ।।

चूंकि लोगों की योग्यताएं तथा समझ भिन्न–भिन्न होती हैं तो मुक्ति का एक समान उपाय नहीं है। गुरू, साधना की प्रक्रिया में सारे संशय मिटा कर, समाधान निकाल कर मुक्ति हेतु, शिष्यों को योग्यता अनुसार क्रमशः ज्ञान, भक्ति, उपासना और निष्काम कर्म हेतु मार्ग पर स्थापित कर देता है। इस कहानी में निश्चल दास का संदेश स्पष्टता मुखरित है कि विभिन्न योग्यताओं और बुद्धि वाले लोग विभिन्न मार्गों से मोक्ष प्राप्त कर अपने रचयिता से मिल सकते हैं। समापन की ओर अन्तिम सातवां तरंग जीवन मुक्त और परम मुक्त मनुष्य का अंतर बताता है। परम ब्रह्म के ज्ञान प्राप्ति से शुद्ध व्यक्ति, जीवित अवस्था में मोक्ष पाकर, जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पा कर जीवन मुक्त कहलाता है। उसे कर्मकाण्ड की औपचारिकताओं को करने का भी बंधन नहीं है। यह एक स्वार्थहीनता की अवस्था है जो अहम् से सर्वम् की ओर संचारित होती है। लगभग 1842 ई० में निश्चल दास जीवन मुक्त अवस्था को प्राप्त हुए थे। ऐसे व्यक्ति की विधि द्वारा स्वीकृत सारी क्रियाएँ होती रहती हैं और वह मृत्यु से पहले ही मुक्त हो जाता है। इस प्रकार के जीवन मुक्त व्यक्ति सारे एकत्रित कर्मसमूह को नष्ट करके शरीर त्यागने के बाद परम मुक्त हो जाते हैं। और अधिक स्पष्ट किया जाए तो परम मुक्त शरीर त्याग कर वही व्यक्ति बनता है जो मृत्यु से पहले जीवन मुक्त था।

निश्चल दास के अतिरिक्त जीवन मुक्त के अनेक उदाहरण हैं जैसे महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, आदि शंकर, गोरख नाथ, कबीर दास, भगत धन्ना जाट, गुरू नानकदेव, दादू दयाल, तोता पुरी, सन्त गंगादास, पूर्ण भक्त, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द। अध्यात्म के पथ पर चलकर इन्होंने जीवनकाल में ही परम तत्व की अनुभूति की। देह त्यागने के बाद परम मुक्त बने। अन्त में निश्चल दास राजा और उसके तीन पुत्रों की काल्पनिक कहानी का निष्कर्ष निकालते हैं जो इस प्रकार है। दो बड़े भाई मुक्ति प्राप्त कर परम मुक्त बने। तर्कदृष्टि नामक तीसरा अनुज अपने पिता के पास लौट आया तथा सांसारिक प्रलोभनों और बन्धनों से मुक्त रह कर, निष्काम भाव से राज्यभार संभाल, अन्त में ब्रह्म में विलीन हो गया।

सारांश यह है कि विचार सागर ग्रन्थ, जनसाधारण के लिए, आमजन की हिन्दी भाषा में वेदों और उपनिषदों का सार प्रस्तुत करता है। वेद उपनिषदों की जगह निश्चल दास ने इस ग्रन्थ द्वारा शिष्यों को वेद ज्ञान पढ़ाया। स्वामी विवेकानन्द तथा तामिलनाडु के भगवान रमण महर्षि, स्वामी राम तीर्थ, शिरडी के सांई बाबा जैसे महान सन्तों ने विचार सागर की प्रशंसा की और सन्त निश्चल दास का अनुसरण किया। 1863 ई० में सन्त निश्चल दास के देहत्याग के वर्ष में जन्मे स्वामी विवेकानन्द ने विचार सागर की सारगर्भित टिप्पणी की थी कि "हिन्दू दर्शन के मूल सिद्धान्तों और वेदान्त में निहित विचारों की यह श्रेष्ठतम कृति है। पिछली तीन शताब्दियों में वेदान्त पर जो लिखा गया है, वह विचार सागर के सामने धुंधला तथा तुच्छ प्रतीत होता है। हिन्दी भाषा में लिखे ग्रन्थों में यह सबसे प्रभावशाली है।" विवेकानन्द ने भारत के युवाओं को विचार सागर पढ़ने का सुझाव दिया। युवाओं को उन्होंने ब्रह्मविद् बन कर दूर–दूर तक 'अपना स्वयं बनो और बनाओ' का संदेश प्रसार करने को कहा। उत्तर भारत में विचार सागर ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय था और चिरकाल तक संस्कृत धर्मग्रन्थों की पहुंच से बाहर लोग इसको पढ़ते थे। आओ अब उनके अन्य दो और ग्रन्थों पर संक्षिप्त दृष्टिपात करते हैं।

वृति प्रभाकर – सन्त निश्चल दास के तीन प्रकाशित ग्रन्थों में से यह एक है। सन्त निश्चल दास के अनुयायी बने राजा रामसिंह बूंदी नरेश के अनुरोध पर विचार सागर के बाद यह ग्रन्थ लिखा। बूंदी नरेश न केवल किढ़ौली में निश्चल दास आश्रम में जाकर उनके शिष्य बने, बल्कि उन्होंने सन्त निश्चल दास से राजगुरू के पद पर स्थायी रूप से बूंदी दरबार में रहने की प्रार्थना भी की। यह सुझाव सन्त ने विनम्र भाव से अस्वीकार कर यदा कदा शास्त्रार्थ के लिए बूंदी आने का आश्वासन दिया। वृति प्रभाकर एक गहन ग्रन्थ है जो विचार सागर ग्रन्थ में वर्णित विषयों का सूक्ष्म परीक्षण करता है। न्याय शास्त्र मुख्यतः इसका विषय है। सारे ग्रन्थ में विद्वतापूर्ण परिचर्चाओं से भरपूर सुसंगठित आठ अध्याय हैं।

युक्ति प्रकाश – निश्चल दास ने इस ग्रन्थ की रचना जनसाधारण को गूढ़ और व्यावहारिक वेदान्त ज्ञान प्रदान करने हेतु की। पंचतन्त्र (200 ई॰पू॰) और हितोपदेश (1,200 ई॰) की पद्धति पर अनेक मनोरंजक और अर्थपूर्ण नैतिक कहानियाँ उदाहरण सहित बताई हैं। इस ग्रन्थ में राजा, रानी, परियां, पशु, पक्षियों पर केन्द्रित 39 युक्तियां हैं। वेद और अन्य हिन्दू धर्मग्रन्थों की पहुंच से दूर लोगों के लिए ये कहानियाँ अत्यन्त उपयोगी हैं।

सन्त निश्चल दास की शिक्षाएं और उनकी सार्थकता

संक्षेप में विचार सागर और सन्त निश्चल दास के अन्य ग्रन्थों में आध्यात्मिक बुद्धि में वेदान्त दर्शन का मिश्रण मिलता है। वेदों की प्रासंगिक महिमा में उनकी अविचलित श्रद्धा थी। दर्शन विद्या के क्षेत्र में इनकी शिक्षाएं युवा प्रतिभाओं को उर्जा दे सकती हैं। यह कहना उपयुक्त होगा कि आध्यात्मिकता से शून्य कोई भी देश आत्म विध्वंस और विनाश के पथ पर होता है। ब्रिटिश शासन काल में, जब इन मूल्यों की अत्यधिक आवश्यकता थी तो निश्चल दास के ग्रन्थों से भारतीय दर्शन को बढ़ावा मिल सकता था।

निश्चल दास का कथन था कि हमारे आध्यात्मिक ग्रन्थ और संस्कृत ज्ञान केवल ब्राह्मणों के अधिकार के दुर्ग नहीं है परन्तु जाति, लिंग, सम्प्रदाय और धर्म के भेदभाव के बिना इन पर सबका अधिकार है। सामाजिक तथा आर्थिक भेदभाव के बिना निश्चल दास आश्रम में सभी लोगों का जमावड़ा रहता था। आम आदमी के लिए उन्होंने विचार सागर बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखा।

निश्चल दास का विश्वास था कि अद्वैत दर्शन के समरूप परम बह्म एक है। परन्तु द्वैतवाद से सृष्टि रचयिता की सर्वोच्चता के बारे में भ्रम और संशय उत्पन्न होता है। हिन्दू दर्शन के तत्त्व ज्ञान कि 'मैं ब्रह्म हूँ' को उन्होंने आगे बढ़ाया। प्रातः ब्रह्म मुहुर्त में वे कभी न्याय शास्त्र इसलिए नहीं पढ़ाते थे क्योंकि न्याय शास्त्र में द्वैतवाद अन्तर्निहित है।

निश्चल दास ने मूर्ति पूजा और कर्मकाण्ड का कभी न तो समर्थन किया और न ही विरोध। किसी मन्दिर में जाकर नमस्कार करने से उनको परहेज नहीं था। व्यक्ति विशेष के बौद्धिक स्तर के अनुसार उन्होंने मोक्ष के तीन मार्ग सुझाए : (1) तत्त्व–ज्ञान मार्ग, (2) उपासना–भक्ति मार्ग, और (3) निष्काम–कर्म मार्ग। हालांकि आंतरिक मानवीय मूल्यों के लिए नैतिक व्यवहार इन तीनों मार्गों के लिए आवश्यक है।

गुरू को अपने विचार शिष्यों पर थौंपना आवश्यक नहीं है। गुरू को अपने शिष्यों को प्रश्नोतर पद्धति से सन्देह और शंकाओं के समाधान के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। गुरू–शिष्य सम्बन्ध में निश्चल दास इस चमत्कारिक नये प्रयोग के

समर्थक थे। आज के परिवेक्ष्य में, प्रचुर लाभ उठाने के लिए 'अध्यापक केन्द्रित' शिक्षा 'विद्यार्थी केन्द्रित' होनी चाहिए।

किसी प्रिय परिवार जन के असामयिक निधन की क्षति को विवेक से स्वीकार करना निश्चल दर्शन के अनुकूल है। यह हमें याद दिलाता है कि ज्ञान के अतिरिक्त कोई हमें नहीं समझा सकता कि मृतक मात्र एक भ्रमजाल था जिसने उसे स्नेह के बन्धनों में जकड़ रखा था। संसार एक आने जाने वालों का मेला है। संसार के सारे सम्बन्ध और घटनाएं व्यवहारिक सत्ता में वास्तविक पर अन्ततः वास्तविकता से शून्य है। पत्नी, पुत्र तथा धन के प्रति विश्वव्यापी आकर्षण सारे दुखों और अधोतम् पतन का मूल कारण है। निश्चल दास की तरह आत्मख्याति और अपनी महानता के प्रसार के लिए प्रचार का आश्रय नहीं लेना चाहिए। निश्चल दास ने शीर्षस्थ ग्रन्थ लिखे, ज्ञान और तर्क के बल पर शास्त्रार्थ में प्रतिद्वन्दियों को हराया, फिर भी मुखरित हुए बिना शांत रहे। इसलिए अपने माता पिता, जन्म स्थान और अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में उन्होंने कहीं कुछ नहीं लिखा। अपनी सारी कृतियों में से केवल विचार सागर के अंत में किढ़ौली (तपोस्थली और कर्मभूमि) का एक पद में जिक्र है, जो दिल्ली से उत्तर पश्चिम दिशा में 45 किलोमीटर पर स्थित है। उन्होंने लिखा है :

दिल्ली तैं पश्चिम दिशा कोस अठारह गाम।
तामै यह पूरो भयो, किहडौली तिहि नाम।।

वे सदा लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास के पक्षधर थे। आयुर्वेद में विशारद होने के कारण असाध्य मानसिक और शारीरिक रोगों का निःशुल्क इलाज करते थे। अकाल जैसी स्थिति में भी उनके आश्रम में गरीबों और दूर से आए लोगों के लिए भण्डारा लगता था।

कई शताब्दियों के निरन्तर पतझड़ के बाद उन्होंने नव वेदान्त के वसन्त का सूत्रपात किया। विचित्र विडम्बना है कि प्रारम्भ से दादू पंथी होते हुए भी, मनीषियों के मत में, उन्होंने दादू पंथ को वेद सम्मत सिद्ध करके, अजर अमर कर दिया। रामकृष्ण मिशन के बुद्धिजीवी और सन्तों ने यह कर के हमारे सिर को गौरवान्वित कर दिया है

कि जग प्रलय की स्थिति में यदि सारा वैदिक साहित्य लुप्त हो जाए, और अगर सिर्फ निश्चल दास का साहित्य बच जाए तो वेदों की पुनर्रचना हो सकती है।

उनके दर्शन और विचारों के धीमे प्रचार के कारण

- प्रजा में निश्चल दास की शिक्षाएं, मुख्यतः जातीय कारणों से दबी रही, क्योंकि साधु–सन्तों में उनके समान वर्ग का वर्चस्व नहीं था।
- क्योंकि वे स्वामी दयानंद की तरह समाज सुधारों के सूत्रधार नहीं थे तो उनको सामाजिक और संस्थागत आश्रय नहीं मिला। वे अन्तर्मुखी आध्यात्मिक प्रकाशस्तम्भ थे।
- जीवन पथ पर वे एकल पथिक थे। श्राप के चलते स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण वे बार–बार दूरस्थ स्थानों पर नहीं जा सके। लगता है उनके अनुयायियों ने उनकी शिक्षा और दर्शन के प्रचार व प्रसार के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए।
- बूंदी के राजा राम सिंह तथा अलवर नरेश विनय सिंह को छोड़ कर उन्हें कोई राजाश्रय नहीं मिला जबकि उनके समकालीन स्वामी दयानंद को 14 राजाओं का आश्रय प्राप्त था। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धान्त और नियम साधारण, सुधारात्मक और रूचिकर थे। इस कारण से उनकी शिक्षाओं और गहन वेदान्त दर्शन पर पटाक्षेप हो गया। उत्तर भारत में ग्रामीण कृषक समाज को आर्य समाज के सिद्धान्त, निश्चल के सूक्ष्म वेदान्त दर्शन की अपेक्षा, अपने पेशे और जीवन पद्धति से अधिक तालमेल करते जंचे। कृषि और युद्ध कार्यों में निपुण किसान वर्ग कर्मकांड को तो संकट काल में ही मानता है। उनके लिए ज्ञान मार्ग के प्रति प्रतिबद्धता अव्यवहारिक और बहुत दूर की बात है।
- ब्रिटिश शासक किसी विषय पर लोगों की एकता और भाईचारा नहीं चाहते थे। प्रशंसा और सहायता करने के स्थान पर, सरकार ने 1899 ई० (छपना– वि. स. 1956) में मुफ्त औषधि वितरण और भंडारा चला रहे निश्चल दास के आश्रम पर भयंकर अकाल के समय में भी छापा मारा। आश्रम में कोई अनुचित कार्यवाही नहीं मिली। छापा मारने वाले दल को मुंह की खानी पड़ी।
- स्थानीय हिन्दी भाषा में लिखा विचार सागर 1848 में प्रकाशन के बाद कई साल तक साधारण हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुदित नहीं हुआ तथा लोगों तक नहीं पहुँचा। कई वर्षों के बाद ही इनके ग्रन्थों का अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू,

गुरूमुखी, बंगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम में अनुवाद हो सका। उनके दस में से सात ग्रन्थ अभी भी प्रकाशित नहीं हो सके हैं।

सुझाव

- हरियाणा प्रदेश अनन्त काल से शैव मत और पूजा का गढ़ रहा है। निश्चल दास के माध्यम से एक नये शिवावतार का उदय स्वाभाविक और गर्व का विषय है। इसलिए आधुनिकता के कारण कुंठित आध्यात्मिक वातावरण में, निश्चल दास की कहानी बता कर युवकों में जागृति लाई जाए। प्रारम्भिक कदम के रूप में पाठ्यक्रम में निश्चल दास पर अध्याय जोड़ा जाए ताकि छात्रों में आध्यात्मिक चेतना जागृत हो।
- ऐसे समय पर जब हजारों साल पुरानी सिन्धु घाटी सभ्यता की राखी गढ़ी जिला हिसार (हरियाणा) में खुदाई हो रही है, समाज और सरकार का भावी पीढ़ियों के प्रति यह दायित्व बनता है कि यह सुनिश्चित करें कि निश्चल दास रूपी आध्यात्मिक पुंज की सांस्कृतिक धरोहर और साहित्य, भूमि की परतों के नीचे न दबा रह जाये। उनकी सात हस्तलिखित कृतियों को भी सामने लाया जाये।
- विद्वानों और शिक्षाविदों द्वारा स्वीकृत विचार सागर ग्रन्थ विश्वविद्यालय के कॉलेज पाठ्यक्रम में हिन्दी, संस्कृत, दर्शन, इतिहास आदि विषयों में क्षेत्रीय भाषाओं में पुनः लागू किया जाए। 1850 ई० के आसपास विचार सागर पंजाब राज्य में पढ़ाया जाता था।
- निश्चल दर्शन का बढ़ावा और लोकप्रियता हेतु, प्रोत्साहन करने के लिए हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड और छतीसगढ़ के कम से कम एक–एक सरकारी विश्वविद्यालय में निश्चल पीठ की स्थापना की जाए ताकि उन पर गहन अध्ययन हो सके।
- जाट जातीय संगठनों को भी निश्चल दास के दर्शन और सिद्धान्तों के पुनरोदय और प्रचार हेतु सभी कदम उठाने चाहिएं। उनकी स्थायी स्मृति हेतु हरियाणा सरकार को किढ़ौली में उनके आश्रम और समाधि स्थल, जो अब जीर्ण अवस्था में हैं, और जन्मस्थान कूंगड में स्मारक बनाने चाहिएं। तिरूपति, यादाद्रि पर्वत (तेलंगाना), सांई धाम, वैष्णो देवी, सिद्धि विनायक, अयोध्या, काशी, मथुरा और केदार–बद्रीधाम की तर्ज पर बने स्मारक असंख्य लोगों को रोजगार देने के अतिरिक्त हरियाणा राज्य कोष को लबालब भर सकते हैं।

- सन्त निश्चल दास बौद्धिक उपलब्धियों, विद्वता और गुणवत्ता की ऐसी धरोहर और विरासत छोड़ गए हैं जो युगान्तर में कभी–कभी पाई जाती है। वे उन मौलिक सिद्धान्तों और मानवीय मूल्यों के साथ खड़े रहे जिनका आजकल उपहास और तिरस्कार होता है। आने वाली शताब्दियों तक उनका जीवन आध्यात्मिकता तथा आत्मसाक्षात्कार के प्रति झुकाव वाले व्यक्तियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

टिप्पणी :

1. मूल लेख अंग्रेजी भाषा में 'यूनिवर्सिटी न्यूज' जर्नल, अप्रैल–2022 प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हो चुका है। लेकिन इस वर्तमान लेख में कुछ और अतिरिक्त नये पहलू जोड़े गए हैं।
2. लेखक, बहुमुल्य सुझावों और हिन्दी रूपान्तर प्रदान करने के लिए श्री भूप सिंह दहिया 'निश्चल रत्न', उपसचिव, भारत सरकार (रेलवे मंत्रालय) के प्रति कृतज्ञ है।

संदर्भ :

1. भूप सिंह दहिया (2018), *भगवान निश्चल दास प्रदेश और संदेश*, दोआबा हाऊस, नई सड़क, दिल्ली।
2. एल.एन. दहिया व कुसुम (2022), Sant Nishchal Das : A Great Vedantic Philosopher, *यूनिवर्सिटी न्यूज*, 25 अप्रैल–01, मई, 2022, उच्चतर शिक्षा का जर्नल, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
3. लाला श्री राम (1885), *The Meta physics of Upanishads Vichar Sagar*, हीरा लाल धोले, कलकता।
4. पीताम्बर (1977), *Sri Vichar Sagar of Sadhu Nishchal Das*, हिन्दी टीका सहित मनोरम प्रकाशन, बम्बई।
5. शिव शंकर मिश्रा (सम्पादक) व भूप सिंह दहिया (प्रबन्ध संपादक) (2021), *विचार सागर विमर्श*, मान्यता प्रकाशन, मायापुरी, नई दिल्ली।
6. स्वामी विवेकानन्द (2015), *The complete works of Swami Vivekananda*, अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कलकता।